आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 6/अंक 3/सितंबर 2026
Received: 15/09/2026; Published: 28/10/2026

कविता

हमारा बाप हमें भेजेगा

- ओम शंकर

ओम शंकर, हमारा बाप हमें भेजेगा , आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 6/अंक 3/सितंबर 2026,** (378-379)

https://doi.org/10.5281/zenodo.23926876

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

हमारा बाप हमें भेजेगा,
दिल्ली जैसे शहरों में
पढ़ने के लिए।
बेचकर अपने खेत-खलिहान
जरूरत पड़ने पर बिक जायेगी
घर की भैंस और मां के गहने।

और हम नामुराद बच्चे—

किसी भवन के मलबे में,
पड़े मिलेंगे।
अपनी किताबों और
माता-पिता की उम्मीदों
के साथ दबे हुए।

फिर हमारी लाशों पर—
नवोदित और स्थापित नेता
रोटियां सेंकेंगे।

राजनीतिक गलियारों में,
हमारे नाम उछाले जाएंगे
बहस - मुबाहिसे होंगे
फिर एक नया मुद्दा आयेगा
राजनीति के बाज़ार में

और हम नेपथ्य में,
कहीं खो जायेंगे
अपने माता-पिता की
सपनों और उम्मीदों की तरह।

****